MIL-I

16/09/20

# संधि

-दिव्या
अतिथि शिक्षक, हिन्दी विभाग
वैशाली महिला कॉलेज, हाजीपुर

★ संधि का शाब्दिक अर्थ है - मेल। वस्तुतः उच्चारण या लेखन की सहजता के लिए दो शब्द या शब्दखंड आपस में जुड़कर प्रयुक्त होते हैं। इस क्रम में पहले शब्द का अंतिम वर्ण एवं दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण आपस में मिलता है। इसके फलस्वरूप कभी तो दोनों वर्ण परिवर्तित हो जाते हैं, कभी एक ही वर्ण परिवर्तित होता है, कभी नया वर्ण जुड़ जाता है तो कभी किसी वर्ण का लोप हो जाता है। वस्तुतः "शब्द निर्माण की प्रक्रिया में दो वर्णों के मेल को संधि कहते हैं"।

जैसे — महा + ईश → महेश

इस उदाहरण में 'महा' शब्द के अंत का 'आ' एवं 'ईश' शब्द के आरंभ का 'ई' वर्ण मिलकर 'ए' का रूप ले चुका है। पूर्ववर्ती वैयाकरणों ने संधि की परिभाषा इस रूप में दी है," —

"दो वर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे संधि कहते हैं।"

इस परिभाषा के अनुसार 'महेश' में आ + ई = 'ए' को संधि कहेंगे, जबकि 'ए' संधि के परिणामस्वरूप बननेवाला नया वर्ण है। संधि आ + ई के मेल की अमूर्त प्रक्रिया है। वस्तुतः कुछ अंशों में यह परिभाषा ठीक होते हुए भी आलोचना की अपेक्षा रखती है। यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि संधि वर्णों के मेल से होनेवाला विकार

नहीं, बल्कि वर्णों के मेल की अमूर्त प्रक्रिया है, इसलिए उपर्युक्त परिभाषा में वर्णों के मेल से उत्पन्न होनेवाले विकार को संधि कहना उचित नहीं है। संधि के बाद बने शब्दों को पुनः पूर्वरूप में लाना 'विच्छेद' कहलाता है।

— क्रमशः